प्रकृति का पराक्रम

मुकेश कुमार शर्मा
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।

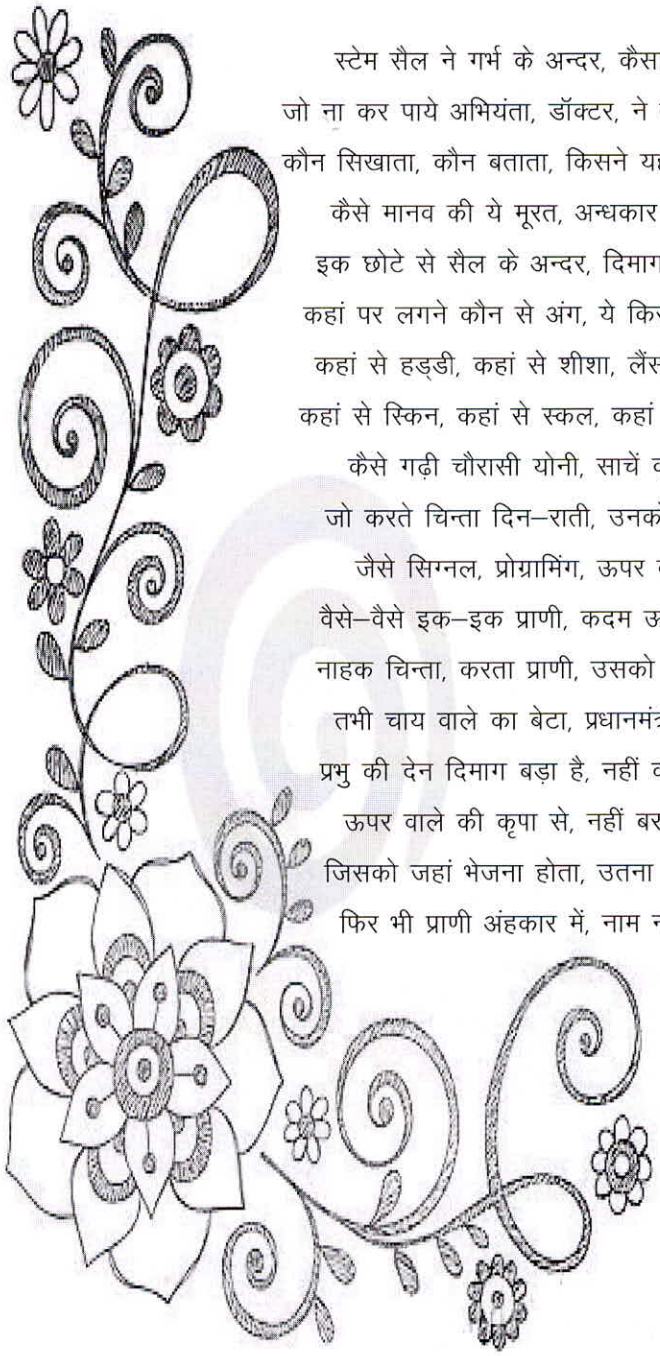

स्टेम सैल ने गर्भ के अन्दर, कैसा साँग रचाया।
जो ना कर पाये अभियंता, डॉक्टर, ने वो कर दिखलाया।।
कौन सिखाता, कौन बताता, किसने यह सब विधि बतायी।
कैसे मानव की ये मूरत, अन्धकार में दी बनाई।।
इक छोटे से सैल के अन्दर, दिमाग कहां से आया।
कहां पर लगने कौन से अंग, ये किसने पाठ पढ़ाया।।
कहां से हड्डी, कहां से शीशा, लैंस कहां से आया।
कहां से स्किन, कहां से स्कल, कहां से जोड़ मंगाया।।
कैसे गढ़ी चौरासी योनी, साचें कहां से आये।
जो करते चिन्ता दिन–राती, उनको कौन बताये।।
जैसे सिग्नल, प्रोग्रामिंग, ऊपर वाला करता।
वैसे–वैसे इक–इक प्राणी, कदम ऊधर को धरता।।
नाहक चिन्ता, करता प्राणी, उसको सब कुछ आता।
तभी चाय वाले का बेटा, प्रधानमंत्री बन जाता।।
प्रभु की देन दिमाग बड़ा है, नहीं कही पर बिकता।
ऊपर वाले की कृपा से, नहीं बराबर मिलता।।
जिसको जहां भेजना होता, उतना फिट कर देता।
फिर भी प्राणी अंहकार में, नाम ना तेरा लेता।।